IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

efDrcks/k dh dfork (ykdr= dk lajkdkj

डॉ रमेश यादव

असि प्रोफेसर – हिंदी

राजकीय (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय कैराना शामली

मुक्तिबोध ने स्वतंत्रता से पूर्व ही लेखन कार्य आरंभ किया था , जब देश आजाद तो नहीं हुआ मगर आजादी झलक मारने लगी थी । मुक्तिबोध की रचनाओं में इसलिए एक नवजात आधुनिक राष्ट्र के सपने और बाद में उन सपनों में दरकन के चित्र मिलते हैं । यह बात सही है कि हिंदी साहित्य में राष्ट्रवादी परंपरा भारतेंदु से मिलने लगती है और कमोबेश छायावाद में तक आते–आते अपने उभार पर पहुंचती है । लेकिन यह राष्ट्रीयता धर्म , परंपरा और नायक पूजा पर आधारित है । सिंह पर सवार हाथ में झंडा लिए हुए भारतमाता इस भाववादी राष्ट्रीयता का लोकप्रिय प्रतीक हैं। इस पुरानी राष्ट्रीयता ने कल्पित स्वर्णयुग के लोगों को , राजसत्ता के पात्रों को अथवा सत्ता सर्मथकों को अपना नायक बनाया है । चंद्रगुप्त , स्कंदगुप्त से लेकर निराला के तुलसीदास तक में यह प्रवृत्ति मिलती है । मुक्तिबोध की राष्ट्रीयता इस मायने में भिन्न है कि उन्होंने एक आधुनिक राष्ट्र के बारे में चिंतन किया है । उनकी राष्ट्रीयता किसी भाव वादी चिंतन की परिणति नहीं है। उनकी राष्ट्रीयता का आधार कोई गुप्त साम्राज्य नहीं है ,कोई शिवाजी नहीं है न हीं कोई अकाली सिक्ख है। उनकी राष्ट्रीयता के मूल में आधुनिकता है , स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व के वह मूल्य हैं , जिन्होने मध्ययुगीन स्वेछाचारी राष्ट्रों के स्थान पर आधुनिक राष्ट्र राज्यों को जन्म दिया । साधारण शब्दों मे आधुनिक राष्ट्र वे राष्ट्र है , जिनमें शासक सुईं की नोक बराबर जमीन अपने बेटी शादी में दहेज के रूप में नहीं दे सकता है। इनका संचालन चंद्रगुप्त की वीरता अथवा चाणक्य की चातुर्यता से नहीं कानून और प्रावधानों से चलता है। आजादी के बाद देश के कर्णधारों ने भारत के लिए लोकतंत्र और आधुनिक राष्ट्र के निर्माण की उम्मीद की थी । मुक्तिबोध का समूचा रचनाकर्म इस आधुनिक राष्ट्रीयता के प्रोजेक्ट की पड़ताल है , इस की भविष्यवाणी भी , इसका स्वप्न भी है और इसका मोहभंग भी।

मुक्तिबोध की कहानी काठ का सपना में पात्र कहता है – '' और उनके दिल में क्या करें , क्या ना करें , सब कुछ कर डालें , क्या यह अच्छा होता कि उनमें यह ताकत होती कि वह सब को प्रसन्न कर सकते और सारी दुनिया को खुश देख सकते कि इतने में सपना टूट जाता है '' मुक्तिबोध को सामान्यतया एक बेहद जटिल लेखक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । सूरदास कबीरदास बिहारी दास , बहुत आगे बढ़े तब छायावाद काव्य जगत तक पहुच रखने वाले लोग मुक्तिबोध को अबूझ पहेली के रूप में प्रस्तुत करते हैं । हिंदी के एक महान आलोचक उन्हें सीजोफ्रेनिया का बीमार घोषित कर देते हैं । काठ का सपना कहानी की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

उपरोक्त पंक्तियां एक बेहद सामान्य पारिवारिक आदमी की पंक्तियां है। मुक्तिबोध ऐसे ही पारिवारिक जीवन से जुड़े साधारण आदमी और असाधारण लेखक हैं। उनकी स्वयं की स्वीकारोक्ति है –

'' जिंदगी में जो कुछ है जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है
गरबीली गरीबी यह यह गंभीर अनुभव सब
यह विचार वैभव सब
मौलिक है मौलिक है
इसलिए के पल पल में
जो कुछ भी जागृत है अपलक है
संवेदन तुम्हारा है

मुक्तिबोध की विशेषता उनकी बेहद निर्मम इमानदारी है। हमारा समाज जो पाखंड मक्कारी और धूर्तता से भरा है , एक सामान्य सहज आदमी को असामान्य बना देता है। मुक्तिबोध अपनी रचनाओं में बार–बार एक सत्य , अरुण कमल ,एक अभिव्यक्ति का जिक्र करते हैं जिसे वह प्राप्त करना चाहते हैं । यह किसी व्यक्ति का सत्य नहीं है बल्कि व्यक्ति के सामाजिक अस्तित्व का सत्य है । यह एक नवजात आधुनिक राष्ट्र के अस्तित्व का सत्य है। इसलिए मुक्तिबोध की कविता का संघर्ष एक आधुनिक राष्ट्र और प्रणाली के रूप में लोकतंत्र को बचा ले जाने का संघर्ष है। इसके उपर मंडराते खतरें ही बार बार उनकी कविताओं में अंधेरें के रूप में आते हैं। कभी मीर ने कहा था , जिसका भावानुवाद –

''शायर हो तो चुपके
मत रहिए
हर इक चुप्पी पर
इक जिंदगी दम तोडती है।''

मुक्तिबोध की कविता नवजात राष्ट्र के लिए चीखती है , संघर्ष करती है। यह संधर्ष व्यक्तिगत है लेकिन इसमें सामूहिकता से मिल पाने की बेचैनी है। अंधेरे में कविता में नायक का समूचा प्रयास किसी लाभ या यश के लिए नहीं है , बल्कि जन और लोक के लिए है। लोकतंत्र के भविष्य के लिए है। कविता में जो शिशु है , वह भारत की नवजात लोकतंत्र है। मुक्तिबोध की कविताओं में प्राय; तनाव मिलता है सकर्मक तनाव । जब उनका प्रयास उद्देश्य को पूरा करने में तत्पर होता है , जब उन्हे प्रयास की सार्थकता का एहसास होता है। तब उनके भीतर खुशी झलक मारती है। ऐसा दुर्लभ क्षण नवजात शिशु को थपथपाते समय होता है–

किंतु, न जाने क्यों खुश बहुत हूँ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

जिसको न मैं जीवन में कर पाया,

वह कर रहा है।

मैं शिशु–पीठ को थपथपा रहा हूँ,

आत्मा है गीली।

पैर आगे बढ़ रहे, मन आगे जा रहा।

डूबता हूँ मैं किसी भीतरी सोच में –

। इस लोकतंत्र में अपना योगदान देने का अहसास है। एक नागरिक और एक कलाकार के रूप में अपने कर्म की सार्थकता ही उनके भीतर सुख और संतुष्टि का अहसास जगाए तो इसमें आश्चर्य कैसा ! सत्ता , बंदूक , फौज के रूप में तानाशाही ही लोकतंत्र के लिए खतरा उत्पन्न करते है। काव्य नायकी की बेचैनी का मूल इस खतरे का ज्ञानात्मक संवेदन और संवेदनात्मक ज्ञान है। वरना वह भी तो दूसरों लोगों की तरह जी सकता था –

' ओ मेरे आदर्शवादी मन,
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन,
अब तक क्या किया?
जीवन क्या जिया !!

दुःखों के दागों को तमगों–सा पहना,
अपने ही खयालों में दिन–रात रहना,
असंग बुद्धि व अकेले में सहना,
जिंदगी निष्क्रिय बन गयी तलघर,

यह बोध ही नायक को सक्रिय बनाता है। उसके भीतर उर्जा का संचार करता है। यह उर्जा आत्म प्रसार या आत्म विकास से आगे की चीज है। इसमें नायक को अपने भीतर के नागरिक और कलाकार की प्रतिबद्धता का बोध होता है। मुक्तिबोध की इस कविता में व्यौरे के भीतर व्यौरा है , स्वप्न के भीतर स्वप्न है और व्यक्तित्व के भीतर भी व्यक्तित्व है। लेकिन यह किसी मानसिक रोग का लक्षण नहीं उद्देश्य के तहत निर्मित गठन है । वह उद्देश्य है जन से मिल पाने का , अपनी अभिव्यक्ति को सफल बनाने का । सफलता संप्रेषणीयता के विकास में है। अपने अर्जित ज्ञान से भीड को जन या जनता बना देने में है। उनके लिए आत्माभिव्यक्ति की खोज असाध्य वीणा की तरह कोई एकांत साधना नहीं है या संत कवियों का रहस्यवाद नहीं है। यह संप्रेषणीयता की एक ऐसी तलाश है , जो लोगों में चेतना का संचार कर सके ,उनको लोकतंत्र के लिए तैयार कर सकें । भारत में लोग सदियों से जाति की , धन की , पद की ,हैसियत की असमानता के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

इस तरह से आदी रहें है। उनमें लोकतंत्र के लिए आदत , विश्वास और प्रतिबद्धता का अभाव है। मुक्ति बोध उस अभिव्यक्ति की खोज में है , जो इस अभाव को भर सकें –

खोजता हूँ पठार... पहाड़... समुंदर
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खोयी हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार
आत्म–संभवा।

बार बार यह सवाल उठाया जाता है कि मुक्तिबोध की रचनाओं का पुनर्पाठ होना चाहिए । आलोचक डॉ रामविलास शर्मा ने नई कविता और अस्तित्ववाद पुस्तक में एक पाठ किया था । आलोचक नामवर सिंह ने उसका खण्डन कर इस खोज को मध्यवर्गीय मानस और अस्मिता की खोज से जोड़कर देखा । उनकी इस त्रुटिहीन व्याख्या को सम्मान देते हुए भी यह पूछा जाना चाहिए कि अस्मिता की खोज में क्या आप क्या सामाजिक अस्तित्व की बात को गौण माना जा सकता है । अंधेरे में कविता एक दस्तावेज नहीं है । कल्पना पत्रिका में पहली बार जब यह भेजी गई तो इसका नाम आशंका के द्वीप अधेरे '' था । इसमें जिस आशंका का जिक्र है वह आशंका भारतीय लोकतंत्र में 1975 में घोषित रूप से व्यक्त हो चुकी है और आज हमारे दौर में यह अघोषित रूप से लागू है । यह स्थिति –

'' सब चुप साहित्यिक चुप कविजन निर्वात
चिंतक शिल्पकार नर्तक चुप हैं
.....
कहीं आग लग गई कहीं गोली चल गई
भव्याकार भवनों के विवरण में छिप गए
समाचार पत्रों के पत्तियों के मुख्य स्कूल
गढे जाते संवाद
गढ़ी जाती समीक्षा
गढ़ी जाती टिप्पणी जन मन उर शूल
बौद्धिक वर्ग है क्रीत दास
किराए के विचारों का विकास
बड़े–बड़े चेहरों स्याहियॉ पुत गई
नपुंसक श्रद्धा
सड़क के नीचे की गटर में छिप गई

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

कहीं आग लग गई कहीं गोली चल गई ''

लोकतंत्र और भारतीयता के गठन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मध्यवर्ग को दी गई । नेहरू ने यह स्वीकार किया कि आधुनिक कल कारखाने की मंदिर है तो पढ़े–लिखा मध्य वर्ग नई भारतीयता का पुजारी । लेकिन पुजारी ने हमेशा की तरह अपनी भूमिका से दगाबाजी की । 1975 में पहली बार जब आपातकाल लगा तो इसको बौद्धिक वर्ग बुद्धिजीवी सबने नतमस्तक होकर स्वीकार कर लिया । एक बहुत बड़े संत ने इससे आगे बढ़कर कहा कि यह तो अनुशासन का पर्व है । पत्रकार डॉम मारिस ने सामान्यत; भारतीय बुद्विजीवियों और खासतौर पर लेखकों और पत्रकारों के संदर्भ में कभी कहा – ''सता ने अखबारों और पत्रकारों से केवल झुकने के लिए कहा लेकिन वे लोग तो उसके सामने रेंगने लग गए । आखिर क्यों ? इस मध्यवर्ग का लोकतंत्र में ना कोई विश्वास है और ना ही कोई प्रतिबद्धता लोकतंत्र भारतीय जीवन प्रणाली में कभी भी जीवन पद्धति का हिस्सा नहीं रहा। यह वर्ग लोकतंत्र के सबसे बडे दुश्मन के रूप में उभरा है । मुक्तिबोध की कविताओं में अंधेरे के पीछे इसी वर्ग की मानसिकता कार्य कर थी। सदियों से सत्ता के आदी इस वर्ग अंग्रेजों के खिलाफ तो स्वतंत्रता , समानता और बंधुत्व के मूल्यों को बढ चढ कर शामिल किया । बाद में इन मूल्यों के कारण जब सत्ता इसके हाथों से खिसकने लगी तो मध्य वर्ग के पुराने सामंती संस्कार जाग उठे और लोकतंत्र के उपर अंधेरा बन कर छा गए ।

कभी लेनिन ने कहा था कि फैंटेसी असहनीय यथार्थ के विरूद्व एक बगावत है। मुक्तिबोध की कविता फैंटेसी के रूप में हकीकत का बयान करती है। इससे भी आगे बढकर वो भविष्य की आहट को व्यक्त करती है। काल और स्थान के दो आयामों के भीतर जो है ,वहीं अस्तित्ववान है। अंधेरे में कविता में जो फैंटेसी है वह भारत में 1975 के दौर में घोषणा के द्वारा आपातकाल के रूप में घटित हुई और आज के दौर में अघोषित रूप से घट रहीं है। ऐसे में लोकतंत्र के प्रहरियों और सर्मथकों को अभिव्यक्ति के परम रूप के लिए , लोगों को अंध राष्ट्रवाद की ओर बढती भीड बनते जाने से रोकने के लिए मुक्तिबोध की रचनाएं आज भी प्रकाश स्तंभ की तरह रास्ता दिखाने में सक्षम जान पडती हैं।

मूल –

- अंधेरें में कविता

सहायक ग्रंथ –

- एक साहित्यिक की डायरी ; मुक्तिबोध भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली ,संस्करण 2004
- नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र ; मुक्तिबोध राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली संस्करण 2014

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

- भारत का इतिहास और संस्कृति ; मुक्तिबोध राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली संस्करण 2010
- मुक्तिबोध की प्रतिनिधि रचनाएँ ; राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली संस्करण 2008
- कविता के नए प्रतिमान ; नामवर सिंह , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली संस्करण 2004